RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-07
July-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

आदी समुदाय की अस्मिता और “दोन्यी-पोलो”

ईङ परमे[1], डॉ. ओकेनलेगो[2]

*[1]शोर्धाथी हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय ईटानगर
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग , जवाहरलाल नेहरु महाविद्यालय पासीघाट, अरुणाचलप्रदेश
[2]प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय ईटानगर, अरुणाचलप्रदेश

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15July 2019

Keywords:अङोताकार,आबाङ, आदी जनजाति, केपेल, तानी,दोन्यी-पोलो, मीरी।

***Corresponding Author**
Email:permeing[at]gmail.com

ABSTRACT

समकालीन समाज में अस्मिता विर्मश एक गंभीर प्रश्न है। दुनिया के लगभग प्रत्येक समुदाय अस्मिता के आधारशिलाओं को समझने एवं पहचानने में लगे हुए हैं। इस तरह अस्मिता विर्मश एक असमाप्त प्रक्रिया बन पड़ी है। आज आदिवासी विर्मश का स्वर काफी तेजी से उभर रहा है। यह समाज अजनबीपन की परिस्थिति में हैं , अतः संषर्घशील है।

भौगोलिक स्थिति ,संस्कृति , धर्म , आदि जनजातीय अस्मिता को निरुपित करते हैं। पूर्वोत्तर भारत विशेषकर अरुणाचल प्रदेश की पहचान एक जनजातीय बहुल भौगोलिक क्षेत्र के रुप में हैं। अरुणाचल प्रदेश में आदी,आपातानी,गालो सहित 25 प्रमुख जनजातियाँ है जो अपनी जातिगत विशिष्टाओं द्वारा पहचानी जा सकती है। अरुणाचल प्रदेश की **आदी जनजाती** की पहचान जाति, वंश,धर्म आदि से होती हैं। **'धार्मिक पहचान'** का प्रश्न केवल जनजातीय समाजों में ही सीमित नहीं हैं,इसकी व्यापक महत्ता हैं। **आदीसमाज** धर्म के संर्दभ में काफी उदार हैं; लेकिन इनका अपना एक मूल धर्म भी है -**'दोन्यी –पोलो' । दोन्यी-पोलो का** अर्थ है सूर्य और चन्द्रमा। स्पष्ट हैं कि ये समाज प्रकृति पूजक है।

दोन्यी-पोलो सूर्य और चन्द्रमा के आराधना पर केन्द्रित हैं जिसमें सम्मिलित हैं पारंपरिक विश्वास, अनुष्ठान , मूल्य आदि। इन अनुष्ठानों ,विश्वासों, मूल्यों के संघटित रुप हैं 'दोन्यी –पोलो'। किस तरह एक धर्म किसी व्यक्ति या समाज की अस्मिता को आकार देता है इसका विश्लेषण प्रस्तुत आलेख में किया जाएगा। किस तरह यह अल्पसंख्यक धर्म महज एक धर्म नहीं अपितु आदी समाज की अस्मिता के रुप में विकसित हुआ है उसका अध्ययन प्रस्तुत आलेख का मूल स्वर है। अध्ययन एवं शोध से इस बात का प्रमाण देते हैं कि **दोन्यी –पोलो** आदी समाज के जीवन के प्रत्येक पक्षों को प्रभावित करतें हैं , जो आदी लोकसाहित्य में भी सशक्त रुप से प्रतिबिम्बित होते हैं। **आदी समाज** का अपना विशिष्ट इतिहास , संस्कृति , दर्शन , सामाजिक व्यवस्था आदि होते हुए भी तथाकथित मुख्यधारा का समाज **आदी** जनों से लगभग अपरिचित हैं। दुनिया से हटकर **आदी समाज** का विकास असंभव हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास की दौर से आदी समुदाय भी अछूता नहीं है। त्वरित विकास की दौर में इस बात की आशंका स्वाभाविक है कि निकट भविष्य में आदी जनजाति*- की अस्मिता जो **दोन्यी –पोलो धर्म से** जुड़ी हुई है अपने मूल स्वरुप को खो देगी। अत: लोकसाहित्य के क्षेत्र में प्राथमिकता के आधार पर उसके संरक्षण की आवश्यकता है। अपनी पहचान को कथित मुख्यधारा के समक्ष हमें स्वयं उभारना होगा। दुनिया के साथ चलकर ही **आदी जनजाति** का विकास हो पाएगा।

प्रस्तावना (Introduction):

अरुणाचल प्रदेश एक जनजाति बहुल प्रदेश हैं। 2011 के जनगणना के अनुसार इस प्रदेश की जनसंख्या 13,83,727जिसमें से बड़ा हिस्सा आदिवासी लोगों का है। इस प्रदेश में 26 बड़े आदिवासी समूह है और सौ से भी अधिक आदिवासी समूह है। इन आदिवासी समूहों में समानताएँ और विविधताएँ मिलती है। जनसंख्या की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी समूहों में आदी जनजाति दूसरा सबसे बड़ा समूहहैं। इसकी अपनी पहचान , भाषा और बोली है। यह समाज संगठित धर्मों के प्रभाव के बावजूद प्रकृति पूजा और पारंपरिकविश्वासों से आज भी जुड़ी हुई है।

आदी समाज में दोन्यी-पोलो के प्रति असीम आस्था हैं। **दोन्यी-पोलो का** अर्थ है 'सूर्य और चन्द्रमा'।स्पष्ट हैं कि ये समाज प्रकृति पूजक है। **दोन्यी-पोलो** सूर्य और चन्द्रमा के आराधना पर केन्द्रित हैं जिसमें सम्मिलित हैं पारंपरिक विश्वास, अनुष्ठान , मूल्य आदि। इन अनुष्ठानों ,विश्वासों,मूल्योंका संगठित रुप हैं--'दोन्यी –पोलो'। उनके लिए दोन्यी-पोलो परम ईश्वर हैं, मुक्तिदाता हैं।ये इस जनजाति की लोक आस्था है। “दोन्यी-पोलोका आध्यात्मिक अर्थ ईश्वर हैं , भौतिक अर्थ – सूर्य (दोन्यी) औरचन्द्रमा (पोलो) , दार्शनिक अर्थ – धार्मिक निष्ठा ।यह सर्वोच्च सत्ता ब्रह्माण्ड को नियंत्रित और संचालित करने वाली शक्ति है। यह सर्वव्यापी , सर्वज्ञ , सर्वशक्तिमानहैं। जो सदैव सतर्क रहता हैं उसे

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आदी में – "दोन्यीमिकमीसेरी न , पोलोमिगोसेरोन " कहते हैं। दोन्यी-पोलो वही है जिसकी आराधनाआदी समाज युगों से करती आ रही है। इनके प्रति भक्ति इस समाज की जीवन शैली में झलकती हैं। ये अपने सुख-दुख ,हर्ष, विस्मय तथा विषम परिस्थितियों में समान रूप से दोन्यी-पोलोकी आराधना करते हैं। इस समाज में शिशु के जन्म , विवाह , त्योहारों , खेती करने से पूर्व अच्छी फसल की कामना , पारंपरिक अनुष्ठानों , किसी के बीमार होने आदि पर वे दोन्यी- पोलो की कृपादृष्टि और दिव्य सहायता के लिए अपनी आस्था को बनाए हुए हैं।

आज दोन्यी- पोलो जैसे अल्पसंख्यक धर्म संकट में है। इसे बदलते सामाजिक स्थितियों में सुनिश्चित किए जाने की जरूरत हैं। हाशियें के इस समाज के इतिहास , संस्कृति के उभार की आवश्यकता है। आदी समाज में ईसाई धर्म को अपनाने के प्रति जो सम्मोहन है वह तीव्रता से बढ़ रही हैं। इसे अपनाने पर आदी समाज में जो परिवर्तन आ रहा है वह चिंताजनक है। हम कह सकते हैं कि आदी समाज में धर्मान्तरण की अधिनूतनप्रवत्ति एक गंभीर प्रश्न हैं। ईसाई धर्म आदी जनजाति के मध्य काफी प्रचलित हैं। इसकी प्रवाह बड़ी तेज होती जा रही हैं। धर्म के नवीनतम रुझान ने इनकी जीवनशैली को काफी प्रभावित एवं परिवर्तित किया है। पहले पारंपरिक सामुदायिक भवन (जिसे आदी में डेरे या मुसुप कहते है) आदी गाँव का यथार्थ था परन्तु आज गिरजा घर अधिक महत्व की बात हो गई हैं। वर्तमान में आदी जनजाति के लोग पश्चिम का अंधानुकरण कर अपनी अस्मिता को खोते जा रहे हैं। बदलते परिदृश्य में इसकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ने वाली प्राचीन आस्था दोन्यी– पोलो को अब साहित्य के द्वारा संरक्षित करने की आवश्यकता आ पड़ी है ।रक्षा करना साहित्य का धर्म हैं। दोन्यी – पोलो एक अल्पसंख्यक धर्म है। यह तो भारत के धार्मिक मानचित्र में भी शामिल नहीं हैं। यदि आज हम लोक विश्वासों को व्यवहार में नहीं लायेंगे तो यह पुरी तरह नष्ट हो जाएगी। हमारी अस्मिता एवं सांस्कृतिक विरासत की जड़ों पर संकट आ जाएगा। आदी समुदाय के प्रख्यात चिंतक गोल्गी - बोतह श्री तालोमरुकबो जी की यही चिंता , थी। उन्होंने आदी जनजाति के परम्पराओं , संस्कृतियों , को अभिव्यक्त करने वालीमंत्रोच्चारण की लोक रीति को संकलित एवं प्रकाशित किया है। उन्होंने आदी समाज के विशिष्ट संस्कृति औरलोकआस्था विषयों पर आदी भाषा एवं अंग्रेजी में अनेक लेख लिखे साथ ही वे धार्मिक भावना बनाये रखने और लोकजागरण के विविध कार्यों में भी प्रयासरत रहें। श्री रुकबो जी काआदी धार्मिक संगठन 'दोन्यी-पोलोयेलामकेबाङपासीघाट'ने मजबूती से साथ दिया और वर्तमान में भी जनचेतना के कार्य में लगा हुआ है।

लगभग प्रत्येक समाज की दैनिक जीवन के विविध पक्षों पर धर्म का प्रभाव रहता है। आदी समाज के विविध पक्षों को धर्म प्रभावित करती हैं। रहन-सहन,आहार-व्यवहार , विवाह- व्यवस्था , पहनावे की विशेष शैली आदि को देखें तो दोन्यीपोलो धर्म का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। अब समय आ चुका है किआदी समाज अपनी पहचान को बनाए रखने के लिएजागरुक रहें। अपने लोकराधना को जीवंत एवं संरक्षित रखने हेतु प्रयासरत रहे। इस संदर्भ में साहित्य महत्वपूर्ण हो जाता है। दोन्यीपोलो धर्म की के पुनरुत्थान के लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम हो सकता है। साहित्य के द्वारा केवल लोक आस्था ही नहीं लिंग, जाति, भाषा, जातीयता आदि के अस्मिता को भी अभिव्यक्ति दी जा सकती है। दोन्यी- पोलोआदी समाज की पहचान है, इस बात की सार्थकता आदी लोकसाहित्य में भीपरिलक्षित होता है।

धर्म और लोक साहिय का नाभिनाल संबंध होता है , और यह संबंध आदी लोक साहित्य के विविध रूपों में देख सकते हैं:

कहावतों के द्वारा:

आदी समुदाय की यह मान्यता है कि दोन्यी –पोलो तानी {मनुष्यों } की रक्षा प्रत्येक परिस्थिति में करते हैं। क्योंकि दोन्यी – पोलोरूना – पीनाअथार्तमार्गदर्शक और विधाताहै। 'रूना – पीना' को आदी समाज के विचारधारा और दार्शनिक फलक का स्रोत मानते हैं।[1] बड़े – बुजुर्ग एवं माता – पिता खुले दिल से दोन्यी – पोलो को साक्ष्य के रुप में स्वीकारते हैं और अपने बच्चों को कहावतों के द्वारा जीवन के सच्चाइयों को समझाते हुए कहते हैं –

1. दोन्यीकिसापेआरोलाङका।
   पोलोकिसापेआरोलाङका।।[2]
   भावार्थ : सूर्य और चन्द्रमा की तरह ईमानदार और सच्चा होना चाहिए। सूर्य और चन्द्रमा सत्य का प्रतीक है ।अर्थात हमें भी उनकी तरह सत्य का निर्वाह करना चाहिए।
2. दोन्यी –पोलो के रूमकीङलो।
   ङानाताकामआतल।। [3]
   भावार्थ :दोन्यी – पोलो की दृष्टि में सभी समान हैं। अर्थात अमीर – गरीब , जाति – धर्म , उच्च – नीच , रंग –रूप , आदि सभी अप्राकृतिक है , मानव निर्मित है।
3. दोन्यीकिसाताकामअम, आकामपेकालाङका।
   पोलोकिसाताकामअमआकामपेआयाङलाङका।।[4]
   भावार्थ: सूर्य की तरह सब को एक समान मानना , चन्द्रमा की तरह सभी को समान रूप से प्रेम करना।

इस तरह दोन्यी- पोलो से हमें अपने जीवन में सच्चाई , समानता , प्रेम , धर्म – निरपेक्षता , सहिष्णुता , सत्यवादिता आदि बनने की सीख तथा प्रेरणा मिलती है।

लोकगाथाओं के द्वारा :

आदी मे यह मान्यता है किदोन्यी -पोलो से ही आत्मा की उत्पत्ति हुई है और आत्मा का घर दोन्यी- पोलो ही है। दोन्यी- पोलो के द्वारा ही आत्मा शरीर में आती है मरणोपरांत उसी के पास आत्मा चली जाती है। जिसे आदी में दोन्यी – पोलोआमोङ कहते हैं , यह स्वर्ग का ही रूप है। जहाँ सदैव सुख, शान्ति और सुन्दरता विद्यमान रहती है। इसलिए आदी समाज में आत्मा को दोन्यी-पोलोआमोङ तक पहुँचाने के लिए पङे अर्थात शोक गीत गाने की प्रथा है। पङे के द्वारा मीरी(पुजारी) मृतक की आत्मा को मार्गदर्शन कर इस नश्वर संसार से दोन्यी—

पोलोआमोङ में सुरक्षित पहुँचाता है। आदी लोगों में यह मान्यता है कि आत्मा वहाँ सदैव के लिए चली जाती है।

इस समुदाय में सोलूङ तथाअतोर पर्वों में पशुओं के देवता दादी सोमी की आराधना में केपेल देने की भी प्रथा है। केपेल एक प्रचलित प्रथा है जिसे दादी सोमी के कहे अनुसार अङोताकार वासी यानी मनुष्यों ने शुरु किया था जो वर्तमान में भी ज्यों विद्यमान है। इन पर्वों में सुअर और मिथुन की बलि इस प्रार्थना के साथ किया जाता है कि दादी सोमी की कृपा दृष्टि हमेशा इस समाज में बनी रहे तथा प्राकृतिक आपदाओं एंव बीमारियों से पशुओं की रक्षा करें। इस संदर्भ का उल्लेख लिमीर – लिबोमआबाङ नामक लोकगाथा उपलब्ध है। 'आबाङ'लोकगाथा को कहते हैं।

"सिकीङकिरान ए रान्नेमें ,
रान्नेदोमाङएमदोरानयेम
तीनेजोनेकेपेइबीदोकोम
ङोम दादी कुकुएमकुलाङका"[5]

गृह निर्माण के पश्चात'कुमनीमोजीन' यानी गृह प्रवेश समारोह में 'कुमनीमोजीनआबाङ'(लोक गाथा) गाया जाता है। इस गाथा में घर को देखभाल करने वाले 'गुमीनसोयीन' की वंदना की जाती है। उनके आशीष की कामना के साथ घरके बनने की प्रक्रिया, उसकी उत्पत्ति , गृह निर्माण में प्रयोग आने वाली तमाम वस्तुओं की उत्पत्ति , उनकी महत्ता आदि पौराणिक , आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक व्याख्या प्रस्तुत की जाती है -----

"गुमीन न नाने

पापाङङोलुताबु अ

निनु अ लाङकु प

सोयीन न नाने

पापाङङोलुताबु अ

निनुसुलाङकु प"[6]

विवाह समारहों में भी दोन्यी- पोलो को याद किया जाता है , इसमें 'ओमुमञयामङआबाङ' गाथा की प्रस्तुति होती हैं। इस गाथा में वर-वधु की सफल वैवाहिक जीवन की कामना करते हैं। यह लड़की केजीवन पर आधारित गाथा है तथा इसमें वधु की मंगलमय वैवाहिक जीवनके लिए प्रार्थना की जाती है। इसमेंदोयीङ-बोते , किनेनाने , आदि देवी- देवताओं से आग्रह करते हैं कि वे समारोह में शामिल होकर , वर- वधु को अपनाआशीर्वाद प्रदान करें।। ग्रह देवता गुमीनसोयीन से भी प्रार्थना करता है कि नव-वधु को स्वीकार करें, उसे आशीर्वाद दें कि , वह ससुराल में हँसी- खुशी सब के साथ मिलजुलकर जीवन व्यतीत करें। अन्न देवी कीने-नाने उसे आशीष दें कि परिवार का खेती- बाड़ी अच्छा हो ,अनाज आदि खाद्य वस्तुओं की कोई कमी ना आए ---

"दोयीङयीङगुआ उ तहनो
उ तहदाकलि ग दागा लिकदोई
उ तहपोरोनोदुआङबीदोई
दोयीङयीङगुआ उतहगीङगु ए गीङकाङदोई
दोयीङयीदुमबोतहगीङगु ए गीङकाङदोई
दोयीङबोतहनोकोमदुआङबीदोई
****
मागोसीपार , ओदङसिपारतालात को सो
कीने नानेनोकोमओदेङसीकोअम ,
बोगुमसिकोअमजोमोबीआदोयी
मागोसिकोअमजोमोबीआदोयी"[7]

लोकगीतों के द्वारा:

पादाम उप-जनजाति में जन्म के दिन और सके अगले दिन यानि दो दीन " आरान" किया जाता है। पहले दिन का आरान- ब्यात्बोआरान तथा दूसरे दिन का होता है। बच्चे के जन्म के तीन- चार दिन बाद ङीलुमकिया जाता है, जिसमेंसभी रिश्तेदारों , दोस्तों आदि को आमंत्रित किया जाता है।इस अवसर पर'ओबोआरानआबाङ'लोकगाथा गाया जाता है। इस लोक गाथा के माध्यम से लोगों की आशीष की कामना करते हुए दोन्यी – पोलो की आराधना करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि वह बच्चे को आशीर्वाद दें जिससे बच्चा 'मिलो आरोह' या 'ज्यामनेआरदा' बने। यानी एक आदर्श बेटा या बेटी बने, माँ – पिता का मिङकङ यानी सहारा बनें , जीवन में सफलता प्राप्त करे , नाम कमाये ,इस लोकगीत में बच्चें के भावी जीवन की शुभकामना व्यक्त करते हैं ---

"दोनी मिलो अ सीजीङपागहदोलाङ अ
तुमीरीनेमोलाङ प
सेकेनामोलाङ प
लोतमोलोकने मोला प
****
सेदी आने गीते म
गीतेरुतुम म तुमदो प
मेलो कोने म कोने ओ गये गेदो प"[8]

दादी सोमीयहाँदोन्यी – पोलो का ही रूप है। " आयीतदाकनाम " प्रचलित धार्मिक अनुष्ठान है। कोई व्यक्ति जब बहुत बीमार पड़ जाता है या वह दुष्टआत्मा के कब्जे में रहता है तो मीरी यानी पुजारी उस बीमार व्यक्ति की भटकती आत्मा की शुध्दिकरण के लिए दोन्यी –

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पोलोआमोङ लेकर जाता है और दोन्यी- पोलो से आशीष दिलाता है। दोन्यी – पोलो से आशीर्वाद पाकर वापस उस आत्मा को गाँव ले जाते है, फिर घर में प्रवेश कराता है और घर के भगवान से अनुग्रह करता है कि आप इस आत्मा का ख्याल रखें। तत्पश्चात उस आत्मा को उस व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करा देता है , जिसकी आत्मा भटक रही थी। यह सारी प्रक्रिया केवल लोकगीतों के माध्यम से होता है।

लोककथाओं के द्वारा :

आदी लोककथाओं में भी दोन्यी- पोलोकी धार्मिक आस्था की झलक नजर आती है। जैसे नीबो – रोबो की कथा। इस लोककथा में आदी लोगों के पूर्वज नीबो मनुष्यों में विभिन्न प्रकार की बीमारी फैलाने वाली दुष्टआत्मातापू – तालाङ से लड़ाई करते हैं। लड़ते – लड़तेनीबो बीमार और कमजोर पड़ने लगता है। गृह देवता गुमीन – सोयीन उसकी स्वस्थ शरीर के लिए पूजा कराते हैं और गुमीन – सोयीन , कीने – नाने , दोयीङ बोते के आशीष से वह स्वस्थ एंव शक्तिशाली बन जाता है। वह ठीक होकर सामान्य जीवन व्यतीत करने लगता है जो दोन्यी – पोलो के द्वारा संभव हो सका। ये देवी – देवतागणदोन्यी – पोलो के ही रूप है।

निष्कर्ष (Conclusion):

इस तरह आदी समाज के जीवन के हर पक्षों कोदोन्यी – पोलो प्रभावित करते हैं। दोन्यी – पोलोकी आराधना इस समुदाय द्वारा चिरकाल से चली आ रही है। जो अलग-अलग परिस्थितयों में , नामो में, रुपो में ,उल्लेखित हैं। वास्तव में दोन्यी – पोलो वह महाशक्ति है जो आदी लोगों की रक्षा करते हैं तथाउनका ध्यान रखते हैं। दोन्यीपोलो का साथ प्रत्येक स्थानों पर है- जन्म से लेकर मुत्यु तक । इस तरह दोन्यी-पोलोमहज एक धर्म नहीं हैं अपितु आदी समाज की पहचान है जो आदी लोक साहित्य में कथाओं , लोकगाथाओं , लोकगीतों , कहावतों आदि रूपों में दृष्टिगोचर होता है। इस तरह दोन्यी – पोलो हमारे मुक्तिदाता हैं , मार्गदर्शक है, आदी समाज की पहचान हैं । प्रस्तुत आलेख आदी समाज की इस पहचान को प्रकाश में लाने की, अपनी पहचान को लोकसाहित्य के माध्यम से जीवित रखने तथा अभिव्यक्त करने की एक छोटी सी कोशिश है। ये मिथक भले ही वैज्ञानिक चिंतन के अनुरुप नहीं है परन्तु ये आदी जनजाति के संस्कृति का मुल आधार है तथा इससे आदी समाज अपने इतिहास के संकेतों को भी तलाशते हैं। आज इसे बड़ी शिद्दत के साथ साहित्य में समेटने की जरूरत है, नहीं तो हमारी संस्कृति, हमारा दर्शन, विशिष्ट सामाजिक- व्यवस्था, खान-पान , वेश-भुषा, इतिहास, लोक व्यवहार की शैली आदि के होते हुए भी आदीसमूह तथाकथित मुख्यधारा के समाज से लगभग अपरिचित रह जाएगी। फलस्वरूप आदी अस्मिता आज संकट में है। आज विश्व के कई देश , समाज तथा जनजातियाँ अस्मिता संकट से गुजर रही है , ऐसे में आदी समाज में आज भी बचाने के लिए बहुत कुछ है। आज जब भी अपने अतीत में झाकँते है तो इन्हें अपनी लोक साहित्य में अपना सुख-दुख , रहन-सहन , खान-पान , दर्शन, रीति-रिवाज , आचार संहिता, इतिहास , भूगोल , भाषा , संस्कृति , शिक्षा और ज्ञान के संचित धरोहर दिखलाई पड़ती है। इसलिए इन लोक साहित्यों को बनाए रखने की पूरी कोशिश इस समाज के तमाम बुध्दिजीवी , सामाजिक संगठन तथा स्वयंसेवी कर रहे हैं। अपनी पहचान को कथित मुख्यधारा के सम्मुख आदी वासियों को स्वयं उभारकर आना होगा। दुनिया से हटकर हमारा आदी समाज का विकास असंभव है , दुनिया के साथ चलकर ही आदी जनजाति का आदर्शविकास संभव होगा।

इस प्रस्तुत अध्ययन से यह बात सामने आती है कि दोन्यी-पोलो आदी समाज के विविध पक्षों को, जन्म से मरण तक प्रभावित करते हैं, भविष्य में भी इस प्रभाव को व्यापक तरीके से अध्ययन करने की संभावनाएँ हैं।

संदर्भ

1. कालीङबोराङ , द प्रीलीमीनेरीस ऑफ दोन्यीपोलोइस्म एस ए पीलोसोफी , पत्रिका- दीगोकरोली पृष्ट-60
2. वही
3. वही
4. वही
5. ईङपरमें , मिथुन की उत्पत्ति तथा मनुष्य पर आधिपत्य की गाथा(लिमीरलिबोमआबाङ) आलेख, पृष्ट -135 से उदधृत ,पूर्वोत्तर राज्यों का लोक साहित्य पत्रिका 2015
6. पोपोक्सलुमानआबाङपृ- 77
7. पोपोक्सलुमानआबाङ पृ-103-104
8. पोपोक्सलुमानआबाङ पृ-131